आज के चार मोती

“”””

नर-नारी

1

यौवन पर आते ही नारी मदमाती बलखाती है।

चाल बदल जाती डग डग पर रूप कलश छलकाती है।।

कोई कुछ भी कहे मगर यह सच सुन लो दुनिया वालो,

पुरुषों की काया इस रस को पीने को अकुलाती है।।

2

अनायास उपजा सम्मोहन जिसे लुभाने लगता है।

अन्धा सा हो जाता उस पर काम फँसाने लगता है ।।

बेशक दोष पुरुष को दे दो फाँसी पर लटका दो पर,

नारी का पहनावा भी नर को उकसाने लगता है ।

3

काम वेग को वश में कर पाने की शक्ति नहीं सबमें ।

नारी नर की चाह नहीं हो यह अनुरक्ति नहीं सबमें।।

आकर्षण पर मर मिटने की मजबूरी होती नर की ,

संन्यासी हो कर रह जाएं ऐसी भक्ति नहीं सबमें।।

4

मेरी मंशा नहीं किसी देवी को आहत करने की।

नहीं चाह यह किसी पाप पर नर को राहत धरने की।।

किन्तु बताना चाह रहा हूँ खेल खिलाती प्रकृति यहाँ,

दाग लगाती कहीं कोशिशें करती चाहत भरने की ।।

डॉ गिरेंद्र सिंह भदोरिया "प्राण"